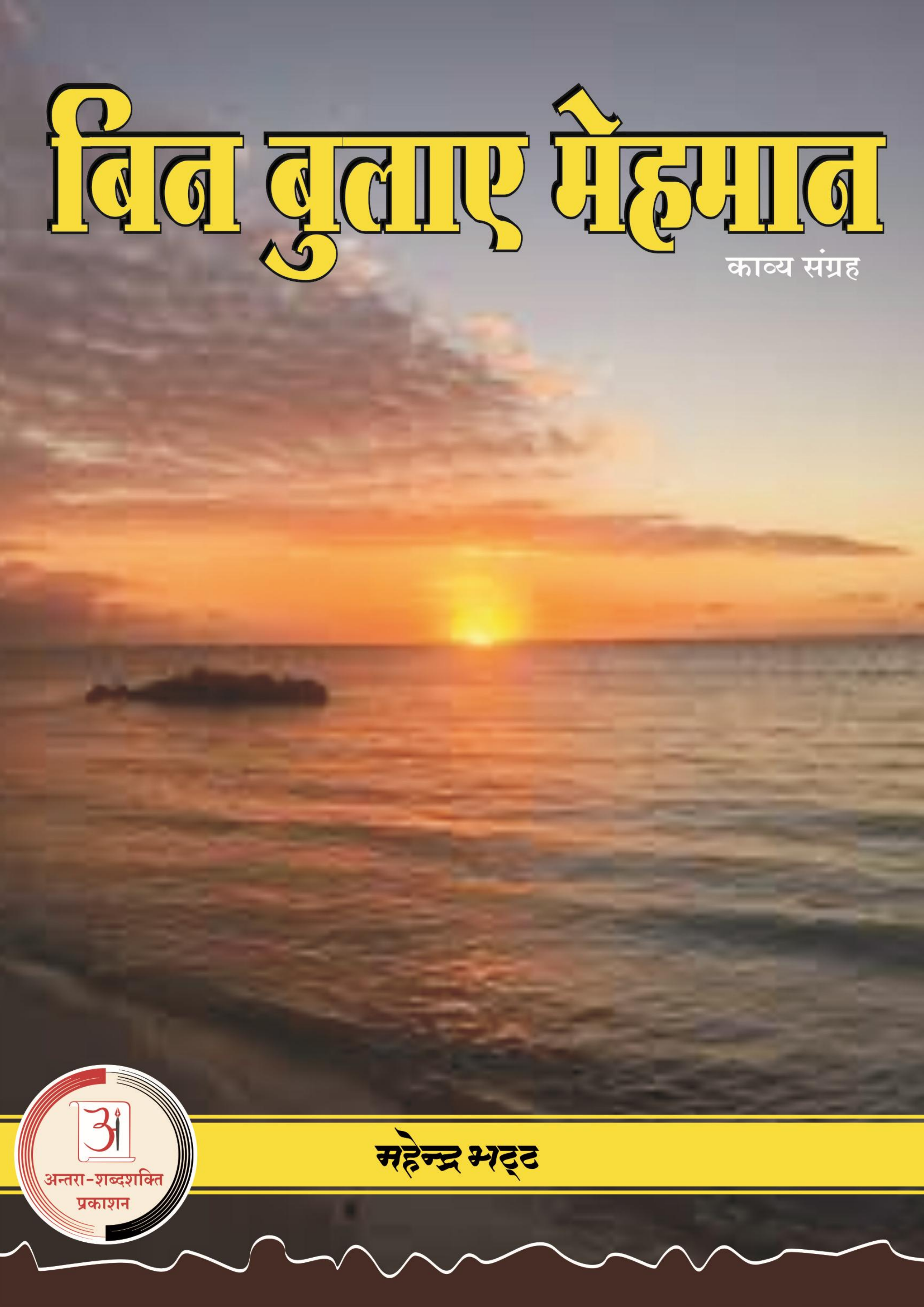

बिन बुलाए मेहमान

काव्य संग्रह

महेन्द्र भट्ट

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

बिन बुलाए मेहमान

काव्य संग्रह

महेन्द्र भट्ट

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-077-3"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **महेन्द्र भट्ट**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

BIN BULAEY MEHMAN BY MAHENDRE BHATT

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

पुरोवाक्

साहित्य क्षेत्र में एक बहुमुखी नाम मेरे भाई महेन्द्र भट्ट का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है, आपका काव्य क्षेत्र बहुआयामी क्षेत्र है, मैंने इनके गीत, गजल तथा कविताओं का तन्मय हो कर रसास्वादन लिया है, अभी अभी इनका एक कविता संग्रह 'बिन बुलाए मेहमान' की कुछ कविता भी पढ़ने का अवसर मिला। अस्तु-

कौन कहता, इंसान जी रहा शान से
आकर पूछिएगा, अंदर भगवान से
सुबह शाम कसमें खायी पेट के लिए
रोटियाँ गायब हो गयी इस मकान से
***
लम्बी, गहरी और बड़ी है नदी
सदैव मुसीबत से लड़ी है नदी
आएगा, तो कोई पाप धोने-
सतत् इंतजार में खड़ी है नदी
***
लिखे पद मजबूर हो के
लौटे नहीं दूर हो के
स्वप्न महल रचे मैंने
रह गए दस्तूर हो के

उपरोक्त कविताएँ आज समय को चुनौती देते हुए कवि अपने मन में आए हुए विचारों को समाज के सामने रखते हुए कहता कि बदलते परिवेश में यह एक बदलाव तक ही सीमित नहीं अपितु अनुभवहीनता समाज में परिलक्षित होती है जिसे मैंने बिना किसी संकोच के लिख दिया।

इससे कवि ने अपनी सरलता ईमानदारी का पालन बड़ी सौम्यता से समाज के सामने रखा है, ऐसा बहुत ही कम साहित्यकारों में मुझे देखने को मिला, इसके लिए सुकवि महेन्द्र भट्ट प्रशंसा के पात्र है, आगे कवि अपने विचार और भी समाज को देते हुए कहते है--

बेदम है, मगर हौसला है
वतन पर जान लुटाने लगे
चलो ठीक रहा, इस दौर में
कर्ज दूध का चुकाने लगे।
***
लबालब तालाब हो गए सद्भाव से
फिर क्यों पीर बढ़ रही रिसते घाव से
अजब माजरा है, जहां घात-प्रतिघात का,
अम्बर का धरती से झगड़ा बिना बात का।

निःसंकोच यह पूरी तरह स्पष्ट होता है कि कवि ने अपनी पूरी कर्तव्यनिष्ठा का अनुपालन करते अपनी बात को व्यक्त किया, इस कविता संग्रह में कवि ने चुनींदी रचनाओ का समावेश किया है, मुझे पूर्णरूपेण विश्वास है कि पाठक समुदाय इन कविताओ को मनोभाव के साथ स्वागत करेगा, इन्हीं शुभकामनाओं सहित...

डॉक्टर कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'
कवि गीतकार पत्रकार एवं समीक्षक
संपर्क- ३८, विजय नगर, करतारपुरा जयपुर
दिनांक --३/१२/२०१६

महायात्रा जारी है....

नज जीवन की साहित्य यात्रा में मुझे जो अनेक पड़ाव प्राप्त हुए है, वे आज मील के पत्थर की माफिक एक लैम्प पोस्ट की तरह प्रतिस्थापित हैं जो आने-जाने वाले राही को व्याप्त तिमिर से प्रकाश की ओर अग्रेषित करते है, चलते हुए पथ पर जो अनुभव प्राप्त किये है, उन्हे शब्द-पोशाक पहनाने का प्रयास भर किया है, मैंने जाना है कि प्रत्येक मनुष्य के दामन मे खुशियां कम है और पीड़ाएं बेशुमार है, मैंने अपनी काव्य सर्जना से उन मायूस चेहरो पर मुस्कान लाने का कर्म किया और सामाजिक विसंगतियो पर प्रहार हेतु शब्द वाण तैयार किये है।

प्रायः यही देखा गया है, मानव खुद ब खुद समस्याओ से जूझ रहा है, कोई आशा की किरण नजर नही है, तब मेरा कवि मन कहता है।

‘कोई तो जबाब फौरन दे दिया करता है।
कोई तो मन मे बात छिपा लिया करता है ।।
कोई तो व्यक्त करता है लिख कर के कागज पे,
कोई तो अपने आंसुओं से कहलवा लिया करता है।।’

बस यही तीसरी पंक्ति से कविता की सृष्टि होती है। समाज व राष्ट्र के लिए मेरी कलम हमेशा चलती रहेगी। हम हमेशा खुशहाल समाज की कल्पना को साकार करने में उद्यत है। समय समय पर इन महत्वपूर्ण पड़ावों पर जो अनुभूतियां हुई है और मेरे अंतस में जो भाव-विचार जागृत हुए है फलस्वरूप जो काव्याणु प्रस्फुटित हुए, उनका समग्र रूप है यह कविता संग्रह ‘बिन बुलाए मेहमान’।

इस कविता संग्रह मे मेरी लेखनी ने लिपिबद्ध कर साहित्य जगत को समर्पित किया है, मेरा यह प्रयास से सृजित संग्रहीत कविताएं संवदेनशील दृष्टि में मेरी संपूर्णता का परिचायक बने। ज्ञात रहे--

‘अंधेरों का आमंत्रण स्वीकार किया मैंने ।

व्याप्त विसंगतियो को अंगीकार किया मैंने ।।
मैं तिमिर झेलता रहा, उजालों के खातिर,
केवल दिनकर जैसा व्यवहार किया मैंने।।'

यह मेरी साहित्य यात्रा का आखिरी मुकाम नहीं है, यात्रा जारी है, जारी रहेगी और जारी रहने के साथ साथ, तमस के खिलाफ जंग जारी रहेगी ।

मां सरस्वती से यही विनती करूंगा-
'हे मां शारदे, मुझे वरदान दो।
ज्ञान दो, मुझे गुणदान दो।।
मेरी कलम रहे सुरक्षित सदा,
सम्मान दो, मुझे अभिमान दो।।
हे मां शारदे, मुझे वरदान दो।।'

'बिन बुलाए मेहमान' की कविताओं को काव्य मर्मज्ञ, प्रबुद्ध रसिकजन एवं सुधी पाठक अपनी सुविधा संतुलन के अनुसार, इच्छित मूल्यांकन कर सकते है। मेरी अभिलाषा है--

'करने वाले कर गये, अपने अपने काम।
तुमको जो अच्छा लगे, दे दो उतने दाम।।'

हृदय की आवाज है--

'मैंने अपना काम किया।
जीवन तेरे नाम किया।।
तेरा दुख खरीदने को,
अपना सुख नीलाम किया।।'

अंत में उन सभी मित्रों, शुभचिंतकों और मेरे जीवन के सहयात्रियो के प्रति हार्दिक आभारी है, जिन्होंने इस रचना शिल्प को मूर्त रूप देने में अथक सहयोग तथा मार्गदर्शन दिया है।

एक बार पुनः धन्यवाद ज्ञापन के साथ आपका अपना ही.

महेन्द्र भट्ट
'प्रतीक'
जे६५४२, दर्पण कालोनी,
ग्वालियर- ४७४०११

अनुक्रमणिका

1.	बिन बुलाये मेहमान	9
2.	हद है	10
3.	जिन्दगी	11
4.	झंडा गाड़ लेते हैं	12
5.	कैसे सहन करूँ	13
6.	आने दो	14
7.	परदा जलता है	15
8.	अजब सन्नाटा है	16
9.	दुरंगी दुनिया	17
10.	देखो तमाशा	18
11.	हाथ दिया था	19
12.	तिरंगा फहराना है	20
13.	स्वप्न-महल रचे	21
14.	शुक्रिया	22
15.	कौन कहता	23
16.	हिन्दी है रसराज	24
17.	सौगात प्यार की	25

18.	झगड़ा बरसात का	26
19.	दूर कहीं	27
20.	वक्त का तकाजा	28
21.	अजनबी	29
22.	बड़ी है नदी	30
23.	ताना–बाना	31
24.	मैं जलूँगा	32

बिन बुलाये मेहमान..

आप मानते क्यों नहीं,

चले आये

बिन बुलाये मेहमान की तरह।

लगते हो ऐसे, जैसे,

ऊँची दुकान में

फीके पकवान की तरह।

अगर आ ही गये तो चुपचाप रहो,

महफिल में,

किसी से कुछ मत कहो।

वरना कैद हो जाओगे,

फाइलों में

दर्द भरी दास्तान की तरह।

हद है..

चमचा-गीरी हद है।
चना-झाड़ बरगद है।

रफू हुई योग्यता,
बे-शऊर बेहद है।

बौना हुआ आदमी,
लेकिन विशाल कद है।

घर में घुसा इस कदर,
खुली हुई सरहद है।

संत बने ऊपर से,
भीतर से हर्षद है।

माल के बाजार में,
माल ही मूल पद है।

संसार में कुछ नहीं,
संसार निरापद है।

सच कोसों दूर हुआ,
झूठ ही सभासद है।

खाली मन है उसका,
सिर्फ, नाम नीरद है।।

जिन्दगी

जिन्दगी,
एक प्रस्तर-प्रतिमा की माफिक,
जो हर चौराहे पर,
बसेरा करती हुई,
आगे बढ़ने का,
उपक्रम करती हुई,
हर पड़ाव पर,
यादों के मंदिर,
बना जाती है,
और हम,
उन्हीं मंदिरों में,
अवस्थित,
देवी-देवताओं को,
मानसपटल पर,
चित्रांकन कर,
जिन्दगी को,
धन्यवाद देते है,
हे मुसाफिर,
तूं कहां जा रहा है,
तेरी जिन्दगी यहीं है,
मेरी अपनी,
जिन्दगी के पास!!

झंडा गाड़ लेते हैं..

सावन कभी, तो फागुन कभी, तो कभी आषाढ़ लेते हैं।
पैसों की लालसा में, अपना खुद छप्पर फाड़ लेते हैं।।

माँ घुट-घुटकर मर जाती है, नालायक बेटों के पीछे,
जो बेटे उम्र भर, अपनी लायक माँ से लाड़ लेते हैं।।

पूरे जतन से रखते सहेज कर, अपने ईमान की दौलत,
मगर औरों की बातों में आकर, चरित्र बिगाड़ लेते हैं।।

आज के इन्द्र कितने एहसान फरामोश होने लगे,
उन महान महात्माओं को छलते, जिनके हाड़ लेते हैं।।

नही सीखा है कदापि, दुनिया की दादागिरी को सहना,
इसलिए अपने आँगन में, ऊँचा झण्डा गाड़ लेते है।।

कड़ी सजा मिलती है पापियों को, परंतु होता क्या है..?
राजकाजियों की तरह, सरेआम दामन झाड़ लेते हैं।।

कभी रंगे हाथ न गिरफ्तार हो सकें, इस कारण से, वे,
काम करते वक्त हमेशा बड़े-बड़ों की आड़ लेते हैं।।

भौतिकता की चकाचौंध में यह ऊष्मा कैसे विसर्जित हो,
इसलिए, घर के अंदर, बच्चों के बीच दहाड़ लेते हैं।।

विकास की पगडंडियों पर लोग इतने सयाने हुए, अब,
'महेंद्र' अपने मतलब की बात, फौरन ताड़ लेते हैं।।

कैसे सहन करूं..?

खंडित-खंडित तेरा मन।
महके पर, चंदन सा तन।।
कैसे सहन करूं,
कब तक सहन करूं ?

हुआ न कुछ भी परिवर्तन, अब भी तुम हो पाथर।
नाम किसी का छीना है, देकर अपना चामर।।
हीन-दीन का भाव लिए,
कैसे रहन करूं,
कब तक रहन करूं?

इतनी बेबस दुनिया में, खूब पुरानी चाहें ।
दूर क्षितिज तक मिलती है, ककरीली जो राहें।।
झूठे अधरों का घर्षण,
कैसे गहन करूं,
कब तक गहन करूं?

'सच' केवल इतना जाना, नयन-भाष को पढ़ लें।
टूटी-फूटी चीजों से, ताजी मूरत गढ़ लें।।
चोर-दृष्टि का भार, मगर,
कैसे वहन करूं,
कब तक वहन करूं?

आने दो..

ये बहुत बड़े हैं, आने दो सानी में।
फैले नागज, आज यहाँ रजधानी में।

क्या औकात तुम्हारी, नीचे वालो,
डूब मरो, जाओ, चुल्लू भर पानी में।

ऊँचे वाला ऊँचा करम करेगा ही,
इन्हें नमन करो, है जो मनमानी में।

तलवे चाटा करते हैं, रजवाड़ों के,
आग लगा दो, ऐसे ज्ञानी-ध्यानी में।

खेत जला, लेकिन मुआवजा नहीं मिला,
फाइल उलझी, उनकी आनाकानी में।

करे आबरू तार-तार, सरे-बाजार ,
रखता रहा मिठास सदा जो बानी में।

छुप कर बैठ गया कानून किताबों में,
खेल खराब कर दिया सब नादानी में।

इज्जत उतरी चौराहे पर मुनिया की,
सबूत खोज रहे, दुनिया हैरानी में।

परदा जलता है..।

हाथ मलता है, कोई बल्लियों उछलता है।
आपने कह दिया- ‘मुहब्बत में सब चलता है’।।

ठंडी छाँव में बचा के रखना, अपना रूप,
साये तो साये, धूप में परदा जलता है।।

अन्धेरों से दोस्ती, अब रास आने लगी,
आखिर मैं भी जान गया, कि सूरज ढलता है।।

दुश्मन धोखा दे यदि, तो, नहीं, मुझे शिकायत,
लेकिन, अपना ही लहू अपनों को छलता है।।

बीतेगा कैसे कल का दिन..? राम ही जाने,
जब आज का दिन बड़ी मुश्किल से निकलता है।।

जीवन कितना भी भारी क्यों न हो ‘महेन्द्र’,
मोम के जैसा, एक दिन जरूर पिघलता है।।

दुखों की अनगिन पौध, भीतर-मन में उगाये,
आदमी के अन्दर, नया आदमी पलता है।।

अजब सन्नाटा है...।

अपनों ने अपने घर को लूटा।
शहर वालों ने शहर को लूटा।

बगावत कर दिया चौराहों ने,
एक संग महा नगर को लूटा।

अजब सन्नाटा है बांबियों में,
सब सांपों ने अजगर को लूटा।

ताल-पोखर-नहर अचरज में है,
नदियों ने जो सागर को लूटा।

एक खबर फैल गयी, सरेआम,
दो बिल्ली ने बन्दर को लूटा।

सन्निपात-युक्त है वातावरण,
खबर दारो ने खबर को लूटा।

नजरों ही नजर,जंग जारी है,
इस नजर ने उस नजर को लूटा।

दुरंगी दुनिया..

कौन कहता कि,
दुनिया दुरंगी है,
कोई क्या करेगा, जब
आपकी आंख दुरंगी है,
आपका मन दुरंगा है,
आपकी सोच दुरंगी है।
इसलिए,
कथनी-करनी में फर्क है।
अन्यथा,
अब तक एकाकार होते।
ईश्वरत्व को प्राप्त कर लेते।
अमर हो जाती मानवता..
किन्तु,
इसके हीन में,
आप कहीं कम है।
बन जाती अद्यतन,
एक विशेष पहचान,
यही ध्यान कर,
सामने वाले की,
दृष्टि नम है।।

देखो तमाशा..

अपनी तबियत सँभालो बाबा।
कुछ नहीं देखो-भालो बाबा।

हवा में, मसीहा के नाम पर,
जुमला कोई उछालो बाबा।

दौड़ अगर जीतना चाहो, तो,
नकली पाया लगा लो बाबा।

लाखों सर न्यौछावर तुमको,
तुरत, बन्दूक चला लो बाबा।

तेरी मंजिल, मेरी सीढ़ियां,
यश-पताका फहरा लो बाबा।

अवसर मिले तो दुश्मन को भी,
अपना साथी बना लो बाबा।

जरा भी, शर्म न करना, तुम तो,
पराया माल पचा लो बाबा।

देखो तमाशा, चैन न खोना,
अभी तो मन समझा लो बाबा।

भरा समुन्दर पागल हो गया,
जगत की रीति निभा लो बाबा ।

हाथ दिया था..

पहले दिल से दिल जोड़ा क्यों?
जोड़ा है, तो फिर तोड़ा क्यों?

सिरफिरों की बातों में आकर,
आँधियों के बीच, छोड़ा क्यों?

हाथ दिया था मन मिलाने को,
पर, तुमने हाथ मरोड़ा क्यो?

खूब रकम बाँट दी लोगो में,
लेकिन हमें दिया थोड़ा क्यों?

रेस मे हार गया तू आखिर,
लकीर से हटकर दौड़ा क्यों?

कहने को मीनार छू लेता,
राह मे तू बना रोड़ा क्यों?

तिरंगा फहराना है..

वही अपने जीवन को,
सफल बनाया करते।
जो खुद दूसरों के लिए,
मिट जाया करते।
मगर उससे ज्यादा,
होता है उसका नाम।
जो इंसान आता है,
देश के काम।
देश के लिए,
जो जान लुटाता है।
वही आदमी,
महान कहलाता है।
हमे ऐसे बलिदानियों को,
इस पावन धरा पर उपजाना है।
देश की सरहद पर,
विजयी विश्व तिरंगा फहराना है।।

स्वप्न-महल रचे..

रोशनी ने लिखा, चाँदनी ने लिखा,
विरह के गीत को, दामिनी ने लिखा!!

लिखे पद मजबूर हो के।
लौटे नहीं दूर हो के।।
स्वप्न-महल रचे मैंने,
रह गए दस्तूर हो के!!

रागिनी ने लिखा, शालिनी ने लिखा,
चुभन के गीत को, कामिनी ने लिखा!!

शीत चली जो ठहर गई।
कोमल काया सिहर गई।।
प्यार की आँच चाहिए,
पलट के हवा गुजर गई!!

यामिनी ने लिखा, भामिनी ने लिखा,
जनन के गीत को, मालिनी ने लिखा!!

मन विचलित-प्रतीक्षारत।
निज शीश-तन किया अवनत।।
सुधा-रस-पान करने को,
गत को भूल गया आगत!!

पालिनी ने लिखा, नाजनी ने लिखा,
मिलन के गीत को, शामली ने लिखा!!

शुक्रिया...

शुक्रिया मेरे दोस्त,

आपने

मुझे हँसने का

मौका दिया,

वरना,

कौन हँसता है,

इस जमाने में।

पूरी जिंदगी,

निकल गई,

सीखने और

सिखाने में।।

कौन कहता..

कौन कहता 'इंसान जी रहा शान से'।
आकर पूछियेगा, अंदर भगवान से।।

सुबह-शाम कसमें खाईं पेट के लिए,
रोटियाँ गायब हो गईं, इस मकान से।।

शान्ति ही शान्ति छा गई, चारों तरफ,
बात यह सुनी है, प्रचंड तूफान से।।

पीछा नहीं छोड़ती आँधियां, इस कदर,
फरमाती- 'मुहब्बत है हमें जहान से'।।

दुश्मन को बाँट दिया प्यार, बेशुमार,
फिर फूटा क्यों, एटम बम आसमान से।।

हिन्दी है रसराज..

हिन्दी तुलसी लेखनी, हिन्दी लिपि रसखान।
हिन्दी कबीर जायसी, सहिन्दी सूर समान।।

हिन्दी पद मीरा रची, हिन्दी केशव छन्द।
जयशंकर हिन्दी लिखी, हिन्दी भाषा नन्द।।
हिन्दी लेखत मैथिली, अज्ञेय और नवीन।
हिन्दी में विद्या गहें, हिन्दी कवि प्रवीन।।

हिन्दी रस सरताज है, पद्माकर-हरिऔध ।
बलशाली हिन्दी बनी, ज्ञानी करते शोध ।।
महाकवि निराला हुये, हिन्दी कवि की आन।
अगणित लेखक अवतरित, हिन्दी लख-लख जान।।

सेनापति हिन्दी कही, तरह-तरह के छन्द।
हिन्दी के सिरमौर है, मुन्शी प्रेम चन्द।।
हिन्दी मातु समान है, नमन करूँ हर बार।
हिन्दी बिन संसार में, होत नहीं उद्धार।।

हिन्दी भाषा अटल है, हिन्दी रूप विकास।
हिन्दी है शशि-रोशनी, चमक रही आकाश।।
हिन्दी पटरानी बनी, रानी भाषा शेष।
अपनाकर सब बोलियां, हिन्दी हुई विशेष।।

हिन्दी माता भारती, कर लो वन्दन आज।
हिन्दी को मत भूलिए, हिन्दी है रसराज।।
हिन्दी भाषा रीढ़ है, बाकी भाषा अंग।
वैचारिकता उपजती, रहती सदा उमंग।।

सौगात प्यार की..

चलो, फिर प्यार कर लें।
एक दिया और धर लें।।

गहन अँधेरा है यहाँ,
बौने उजले आवरण।
चरण पूर्ण होंगे, तब,
बदले जब निज आचरण।।
संबल लेकर नेह का,
संसार-सागर तर लें। चलो,.....

चिरपरिचित मुखौटे हैं,
नहीं जिनका हिसाब है।
फल की बात कौन करे,
जब मूल ही खराब है।।
अपना मन खाली हुआ,
प्रेम सुधा रस भर लें। चलो,......

पास आते ही सबकुछ,
लूटता अपना-मेरा।
अगले पल मिटा जाता,
कोई न होता तेरा।।
मनुजता, गर जीवित है,
तो, परहित पीर हर लें।
चलो, फिर प्यार कर लें।
एक दिया और धर लें।।

झगड़ा बरसात का.....

अम्बर का धरती से झगड़ा, बिना बात का।
पहले न देखा, ऐसा झगड़ा बरसात का।।

बादल तो हमेशा, नीर बरसाता रहा।
प्यासी धरा की प्यास, बुझाता रहा।।
फिर क्यों तमतमा रहा है, मौसम आघात का ?
अम्बर का......

उग्र हवा चल पड़ी क्यों, बरबादियों की?
मिटने लगी बस्तियां, क्यों आबादियों की?
दिन में भी दिखलाया दृश्य, अद्भुत रात का।
अम्बर का.......

जाने क्यों भाव-रिक्त हुये हैं हृदय?
मन को ग्रसित करने लगा अज्ञात भय।
अनुत्तरित प्रश्न उठा, अपने जजबात का।
अम्बर का........

लबालब तालाब हो गये सद्भाव से।
फिर क्यों पीर बढ़ रही रिसते घाव से?
अजब माजरा है जहाँ, घात-प्रतिघात का।
अम्बर का धरती से झगड़ा, बिना बात का।
पहले न देखा, ऐसा झगड़ा बरसात का।।

दूर कहीं

‘दूर कहीं,

नज़र न आता,

दो बूंद नीर,

प्यास से,

छटपटाता पंछी,

उड़ता रहा,

उड़ता रहा,

इक छांव मिली,

झाडियों के बीच,

नीचे अमृत कुंड,

प्यास बुझा कर,

उड़ने लगा,

अगले पड़ाव की ओर ....!’

वक्त का तकाजा..

वक्त का तकाजा है, दुश्मन से प्यार करो।
दुश्मन की हर बात को, मन से स्वीकार करो।।

जब सामने पागल हो, तो लड़ने से क्या फायदा?
जो न समझे बात को, और न माने कोई कायदा।।

उसे मारने में, शस्त्र बेकार जाता है।
जीतने पर भी, मेरा मन हार जाता है।।

अभावों में उसे जीने दो, समय का आदेश है।
अमन की राह में, वह जन्मजात क्लेश है।।

उसे छोड़ो या मारो, कोई फर्क नहीं होता।
सागर में नीर उड़ेलने का, कोई तर्क नहीं होता।।

यह तो खूनी जोंक है, खून पीता है, पीता रहेगा।
वह बार-बार मर के भी, जीता है, जीता रहेगा।।

उससे मत, हाथ दो-चार करो।
जैसा भी है, उसे अंगीकार करो।।

अजनबी ....!

अजनबी करीब आने लगे।
नये सम्बन्ध बनाने लगे।।
दर्द की बस्तियों मे जा कर,
दर्द –ए– हयात गाने लगे।।
बनाने से बनती है बात,
उलझी बात सुलझाने लगे।।
मन का सुख बिखर न जाये,
रूठे मन को मनाने लगे।।
प्रेम के धागे जोड़ दिये,
आज अपने बेगाने लगे।।
जो मेरी आंखो से देखा,
सपने सारे सुहाने लगे।।
जिनको सलीका नही आया,
वो आईना दिखाने लगे।।
बेदम है, मगर हौसला है,
वतन पर जान लुटाने लगे।।
चलो ठीक रहा, इस दौर में,
कर्ज दूध का चुकाने लगे।।

बड़ी है नदी ..।

लम्बी गहरी और बड़ी है नदी।
सदैव मुसीबत से लड़ी है नदी।।

आएगा तो कोई पाप धोने,
सतत इंतजार में खड़ी है नदी।।

आस की मंजिल मिल ही जाएगी,
नित बढ़ने की सुखद घड़ी है नदी।।

मन चंगा हो जाता पावन नीर से,
जगमग रूप की फुलझड़ी है नदी।।

इसे बहता देख,मैं जी रहा हूं,
पवित्र नेह की हथकड़ी है नदी।।

जिसने तलाशा है, मिला उसी को,
रत्न-जटित जादुई छड़ी है नदी।।

धर्म-चादर गंदली न हो जाये,
पापियों के पीछे पड़ी है नदी ।।

ताना-बाना ...!

यूं मत बुनो मौत का ताना बाना।
मौत कहां है...? नहीं किसी ने जाना?

जीवन तो सरल है, इसे जीने दो।
करनी-धरनी का निचोड़ पीने दो।।

जीवन भ्रम है, मगर मजबूरी है।
मौत के पहले जीना जरूरी है ।।

हम हैं तो जीवित रहेगा संसार।
अभी न मनाना मातमी त्यौहार।।

ऐन मौत छोटी है, किन्तु बड़ी है।
नर के जन्मते ही पीछे पड़ी है ।।

जिन्दगी युद्ध जीतने का नाम है।
मृत्यु तो केवल सुफल परिणाम है।।

मैं जलूँगा....।

मैं जलूँगा,
अवश्य जलूँगा,
बेशक मुझे जलाओ।
लेकिन,
प्रतिशोध में नही...!
इस भावना के साथ,
कल्याण की कामना लिये,
इतना मुझे जलाओ,
कि मैं जल-जल कर,
प्रहलाद बनूँ..!
तप-तप कर,
कुन्दन बन जाऊँ।
फिर मैं,
तुम्हारे ही काम आऊँ..!!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - **महेन्द्र भट्ट**

पूरा नाम - महेन्द्र कुमार ब्रह्मभट्ट

जन्म - ११/६/१९५५, सेवढ़ा जिला दतिया (मध्य प्रदेश)

पिता - श्री रघुवीर प्रसाद भट्ट

माता - श्रीमती लाल बाई

शिक्षा - एम.कॉम., एल.एल.बी., पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन् जर्नलिज्म (जयपुर)

सृजन - विगत ४६ वर्षों से हास्य व्यंग्य, कविता, कहानी, दोहा, गीत, गजल, क्षणिका, वृतांत, उपन्यास, नाटक, निबंध, रिपोर्ताज, तथा बाल साहित्य सृजन आदि विधाओं में अनवरत लेखन

प्रकाशन - अखिल भारतीय विभिन्न समाचार-पत्र - पत्रिकाओं में गद्य - पद्य रचनाओं का नियमित प्रकाशन

प्रसारण - आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा विविध टी.वी. चौनल्स से काव्य पाठ

प्रकाशित कृतियां- 'जंग जारी है' (कविता संग्रह), 'चुल्लू भर पानी' (हास्य व्यंग्य क्षणिका संग्रह), 'मेरी मम्मी' , 'मेरे पापा', 'बिटिया रानी' (सभी बाल कविता संग्रह), 'बुरे फंसे कार लेकर' (व्यंग्य संग्रह) इत्यादि ।

स्तंभ लेखन - 'चुप चर्चा चालू है', 'महाभारत प्रसंग', 'व्यंग्य तीरे', 'व्यंग्य चक्रम', 'टेढी खीर', और 'यह मजाक नही है'।

संपादन - काव्य संकलन 'अक्षर आदित्य', 'शब्द साक्ष्य', 'शब्द सुमन', 'युग सेवा'(क्षणिका अंक), 'शब्द सूर्य', 'एक मुस्कान का अर्चन', 'छिटक रही चाँदनी' (भाग एक और दो) इत्यादि ।

सम्मान - 'सृजक संसद मुरार' द्वारा 'आदर्श व्यंग्यकार सम्मान'(१९९३), 'मध्य भारतीय हिन्दी साहित्य सभा ग्वालियर' द्वारा बसंत पंचमी निराला जयंती पर 'युवा साहित्यकार सम्मान' (१९९६), 'अखिल भारतीय बाल कल्याण संस्थान', कानपुर द्वारा शिमला में 'विशिष्ट बाल साहित्यकार सम्मान' (१९९७), 'रंजन कलश', भोपाल द्वारा 'रंजन कलश शिव सम्मान'(२००५), 'मध्य प्रदेश लेखक संघ' ,भोपाल द्वारा 'पुष्कर जोशी सम्मान' २००७, 'साहित्य मण्डल' श्री नाथ द्वारा राजस्थान द्वारा हिन्दी भाषा भूषण सम्मानोपाधि (२०१०), ग्वालियर विकास समिति ग्वालियर द्वारा 'साहित्य सम्मान'(२०१३), श्री राम सेवक बुंदेली साहित्य एवं संस्कृति परिषद् डबरा द्वारा 'श्री राम सेवक स्मृति सम्मान' (२०१३) सहित अनेकों अलंकरण

विशेष - अखिल भारतीय काव्य मंचो पर काव्य पाठ, स्थापित हास्य व्यंग्य कवि, मूलतः गीतकार, साहित्यिक-सामाजिक गतिविधियों के आयोजन में सक्रिय रूप से भागीदारी, संयोजन तथा संचालन

संप्रति - शिक्षा विभाग ग्वालियर में अध्यापन कार्य से सेवानिवृत्त । वर्तमान में एडवोकेट ।

संपर्क - 'प्रतीक', जे/५४२ , दर्पण कालोनी, ग्वालियर - ४७४०११

दूरभाष - 0751-2343684

मोबाइल - ०९३०१५०८२२२, ९७५३८१९५३०

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-077-3

मूल्य 60/-

शब्द सुगंध